

---

# Bhillakritam Nilagrivashiva Stotram

---

## भिल्लकृतं नीलग्रीवशिवस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Bhillakritam Nilagrivashiva Stotram

File name : shivastotrambhillakRRitaMnIlagrIva.itx

Category : shiva, shivarahasya, stotra

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 19 | 180-188||

Latest update : April 28, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 28, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

भिल्लकृतं नीलग्रीवशिवस्तोत्रम्



सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा  
साक्षी वेत्ता निर्गुणेश्वरश्च ।  
सोमो नित्यो निर्विकारश्चिदात्मा  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८० ॥

मायातीतो मोहिताशेषलोकः  
सोमाकारः सामवेदस्वरूपः ।  
सर्वाशास्यः सर्वरूपो महेशो  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८१ ॥

व्यक्ताव्याक्तानादिधर्माभिगम्यो  
व्यक्ताव्याक्तानादिधर्माभिगम्यः ।  
व्यक्ताव्यक्ताऽनादिवेदाभिगम्यो  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८२ ॥

यं वेदान्ता नैव जानन्ति देवं  
यस्मान्नित्यं वेदवाचो निवृत्ताः ।  
यं ब्रह्माद्या नैव जानन्ति सोऽयं  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८३ ॥

यत्सव्याङ्गादुद्भवः सृष्टिकर्तुः  
यद्द्वामाङ्गाज्जन्म सम्प्राप विष्णुः ।  
यः सर्वेशः सोऽयमाद्यन्तशून्यो  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८४ ॥

यं सर्वेशं तत्त्वतो वेदनिष्ठा  
विज्ञायेशं पूजयन्त्यादरेण ।  
सोऽयं शर्वः सर्ववेदान्तवेद्यो  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८५ ॥

यस्यापाङ्गस्पन्दमात्रेण नित्यं  
ब्रह्मोपेन्द्रेन्द्रादयः कम्पमानाः ।  
दूरे तिष्ठन्त्यन्वहं सोऽयमीशो  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८६ ॥

यत्पादाब्जं विष्णुरत्यन्तभक्त्या  
स्वीयं नेत्रं सम्यगदुत्खाय रम्यम् ।  
स्वाभीष्टार्थं पूजयामास सोऽयं  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८७ ॥

यस्य स्मृत्या सर्वपापौघनाशो  
यत्पूजातो घोरसंसारनाशः ।  
यस्य स्तुत्या मुक्तिरामैव सोऽयं  
नीलग्रीवः पातु मामाधिदुःखात् ॥ १८८ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते भिल्लकृतं नीलग्रीवशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः १९ । १८०-१८८ ॥

- .. shrIshivarahasyam ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 19 . 180-188  
..


Notes:

Bhilla भिल्ल eulogizes and worships Nilagrīva Śiva नीलग्रीव शिव at the Kālahastīśvara kṣetra कालहस्तीश्वर क्षेत्र.

The Chapter 19 has a further description about the Intense Devotion of The Bhilla भिल्ल where he tries to protect the Śivaliṅga शिवलिङ्ग from damage that might be caused by the stones as the temple falls, by arching himself over the Śivaliṅga शिवलिङ्ग instead of running away to protect himself.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

pdf was typeset on April 28, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

